बेहद का वैराग्य - 05

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ विश्व-परिवर्तन होने के पहले विश्व की सर्व-आत्माओं में वैराग्य वृत्ति होगी। **और वैराग्य वृत्ति से ही बाप के परिचय को धारण कर सकेंगे कि हाँ हम आत्माओं का बाप आ चुका है। तो जैसे विश्व की आत्माओं में वैराग्य-वृत्ति ही परिवर्तन का आधार होगा वैसे ही जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं उन्हों में भी सम्पूर्ण परिवर्तन का आधार बेहद का वैराग्य बनेगा।**

➳ _ ➳ **तो संगठन में भी बेहद के वैराग्यवृत्ति को लाने का पुरुषार्थ करो। एक-दो के साथी व सहयोगी बनो। जब वैराग्यवृत्ति इमर्ज रूप में होगी तो पुराने संस्कार व स्वभाव बहुत जल्दी और सहज ही वैराग्य-वृत्ति के अन्दर मर्ज हो जायेंगे।**

➳ _ ➳ सब सोचते हैं ना कि क्या होगा जो पुराना पन सब भूल जायेगा। **मनुष्य को जब हद का वैराग्य होता है तो पुराने आकर्षण के संस्कार और स्वभाव आदि को समाप्त करने में वैराग्य-वृत्ति ही आधार बनेगी। इस से ही चेन्ज आयेगी। अब ऐसी धरनी बनाओ और ऐसे बेहद के वैरागियों का संगठन बनाओ, जिन्हों के वाइब्रेशन्स और वायुमण्डल द्वारा अन्य आत्माओं में भी वह संस्कार इमर्ज हो जायें।**

➳ _ ➳ **जैसे सेवाधारियों का संगठन होता है वैसे बेहद के वैरागियों का संगठन मजबूत होना चाहिए जिसको देखते ही अन्य आत्माओं को भी ऐसा वायब्रेशन आये। एक तरफ बेहद का वैराग्य होगा दूसरी तरफ बाप के समान बाप के लव में लवलीन होंगे, तब ही बेहद का वैराग्य आयेगा।**

➳ _ ➳ **एक सेकेण्ड भी और एक संकल्प भी इस लवलीन अवस्था से नीचे नहीं आयेंगे। ऐसे लवली बाप के लवली बच्चों का संगठन हो। उनको कहेगे लवली संगठन। एक तरफ अति लव दूसरी तरफ बेहद का वैराग्य दोनों का संगठन साथ-साथ समान दिखाई देगा, ऐसा संगठन बनाओ तो वह तारीख स्पष्ट दिखाई देगी। यह संगठन ही तारीख को प्रसिद्ध करेगा। (21.10.1975)**

➢ वैराग्य

➳_ ➳ पुराना स्वभाव और पुराना संस्कार जो लम्बे समय से चल रहा है,

→ वो बड़े प्यार से समजाने से नहीं जाने वाला है

■ उसको थोड़े धक्के की आवश्यकता है

▶ कुछ परिस्थिति आएगी बड़ी

▶ जो हमे हिलाके रख दे

▶ तभी बेहद का वैराग्य उत्पन होगा

➳_ ➳ **संसार की आत्माओ में वैराग्य तब आयेगा,**

→ **जब हम में वैराग्य होगा**

- **जो एकदम लव में लवलीन होंगे**
  - **वो सहज ही बेहद के वैरागी हो जायेंगे**
- जो एकदम प्रेम में मग्न होंगे
  - उसे संसार, संसार की बाते
  - संसार की चीजे
  - वैभव
  - व्यक्ति
- इन सबसे उसका वैराग्य होगा
  - **और वह स्वतः ही मोह भंग की अवस्था में पहुचता है**
  - **उसे और कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं रहती है**
- **उसे स्वतः ही बेहद का वैराग्य आ ही जायेगा**

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बेहद की वैराग्य वृत्ति को टीचर्स अपने में अनुभव करती हैं? **बेहद की वैराग्य वृत्ति है कि अपने सेन्टर्स व जिज्ञासुओं से लगाव नहीं। जब इस लगाव से बेहद का वैराग्य होगा तब जयजयकार होगी। सब स्थूल, सूक्ष्म साधनों से बेहद का वैराग्य।** ऐसी धरनी बनी है अथवा थोड़ा सेन्टर्स से चेन्ज करें तो हिलेंगी? जिज्ञासुओं पर तरस नहीं पड़ेगा?

➳ _ ➳ जरा भी उन्हों के प्रति संकल्प नहीं आयेगा? ऐसे अपने को चेक करना चाहिए कि ऐसा पेपर आये तो नष्टोमोहा हैं? अपनी महीन रूप से चेकिंग करो कि अभी कोई ऑर्डर हो तो एवरेडी हैं? इस सेन्टर की सर्विस अच्छी है, तो सर्विस अच्छी से भी लगाव तो नहीं है? **जब सबसे उपराम हों तब बेहद की वैराग्य वृत्ति कहेगे। अपने शरीर से भी उपराम। जैसे कि निमित्त सेवा-अर्थ चलाते हैं।**

➳ _ ➳ **लगाव की निशानी यह है कि बुद्धि बार-बार बाप से हट कर उस तरफ जाये तो समझो लगाव है। अपने आप से भी लगाव न हो।** जो अपने में विशेषता है, कोई में हैन्डलिंग पॉवर अच्छी है वा कोई में वाणी की पॉवर है तो कहेंगी मैं ऐसी हूँ। परन्तु यह तो बाप-दादा की देन है।

➳ _ ➳ **अपने ज्ञान की विशेषता, विशेषता कोई भी हो, उससे भी लगाव नहीं।** इसमें भी अभिमान आ जाता है इससे तो यह बुद्धि में रखो कि - ‘ यह बाप से मिला हुआ वर्सा है। **जो सर्व-आत्माओं के प्रति हमें मिला बेहद का वैराग्य है, जो दे रहे हैं, हम तो निमित्त हैं।**

➳ _ ➳ ऐसे बेहद के वैराग्य वृत्ति का संगठन टीचर्स का होना चाहिए। **जो चलने से, देखने से और बोलने से सबको महसूस हो कि ये बेहद के वैरागी हैं। ज्ञान से सेवा करने में होशियार हैं, यह तो सब महसूस करते हैं। अब बेहद के वैराग्य का अनुभव करो, जो दूसरे भी अनुभव करें।**

(25.10.1975)

➢ बेहद के वैरागी

➳_ ➳ हमारे चलने बैठने उठने से सबको मालूम हो की,

→ यह बेहद के वैरागी है

■ **यह वो है, जो साधना में चल रहे है**

▶ **यह साधनों के वश होने वाले नहीं है**

➢ जीवन

➳_ ➳ **जीवन अनित्य है**

→ **क्षणभम्भुर है**

■ **इसलिए जितना हो सके अभी कर ले पुरुषार्थ**

▶ **बाद में दुबारा यह चांस मिलने वाला नहीं है**

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **ड्रामानुसार कलियुगी दुनिया का दु:ख और अशान्ति का नज़ारा देख बेहद के वैरागी बनते जायेंगे। कुछ भी होता है, अपनी सदा चढ़ती कला हो। दुनिया के लिए हाहाकार है और आपके लिए जय-जयकार है।** आप जानते हो यह दुनिया हाहाकार होने वाली है। हाहाकार होना अर्थात् जाना।

➳ _ ➳ **किसी भी परिस्थिति में घबराना नहीं। हमारे लिए तैयारी हो रही है। साक्षी होकर सब प्रकार का खेल देखो। कोई रोता है, चिल्लाता है, साक्षी होकर देखने से मज़ा आता है। 'क्या होगा?' यह क्वेश्चन भी नहीं उठता।**

➳ _ ➳ **यह होना ही है। ऐसे अटल हो ना? 'क्या होगा?' यह क्वेश्चन तो नहीं उठता। अनेक बार यह सब हलचल देखी है और अब भी देख रहे हो। क्या भी हो दुनिया में, लेकिन याद की भट्टी में रहने वाले सदा सेफ रहते हैं।**

(07.12.1979)

➢ भय (डर)

➳_ ➳ हमे किसी भी परिस्थिति में गभराना नहीं है

→ हमारी अवस्था सदा **निर्भय** होनी चाहिये

→ हमारी अवस्था सदा **निडर** होनी चाहिये

→ हमे अपने डर पर थोडा सा काम करना है

■ पहले तो चेक करना है की, हमे किससे डर है ?

▶ **मृत्यु डर**

▶ **परिवारजनों की मृत्यु का भय**

→ **हमे साक्षी होकर हरेक आत्मा का पार्ट देखना है**

■ **यह खेल चल रहा है, इसे साक्षी होकर देखना है**

▶ और साक्षी होकर वही देख सकेगा

- जिसे आदत है

- साक्षी होकर खेल को देखेंगे, तो मजा आयेगा

- फिर क्या होगा? यह QUESTION भी नहीं उठेगा

➳_ ➳ अंतिम समय में चारो तरफ मौत का तांडव होगा

→ यह सब देखने के लिये शक्ति चाहिये

- दुखो के पहाड़ गिरेंगे

- **हमे अपनी अवस्था को अचल अडोल बनाय रखना है**

→ क्या होगा ? कब होगा ?

- यह QUESTION तो नहीं उठते है न?

- अनेक बार यह सब खेल देखा है

- और अब भी देख रहे है

→ दुनिया में भल क्या भी हो

- पर सबसे SAFE वो है

- **"जो सदा बाप के साथ है"**

- **"जो साक्षी है"**

- जिसकी प्रीत पढाई और मुरलीधर से है

- जिसकी प्रीत पढाई है

- जिसका ATTENTION रूपी चोकिदार सुजाग हो

- जो साफ दिल है

- जो सच्चे है

- जो उपराम है

- जो विदेही है

- जो अकर्ता है

- जो बेहद के वैरागी हो

- जो नष्टोमोहा है

- जो निमित है

- जो निर्भय है

➳_ ➳ **जो याद की भठ्ठी में रहता है**

→ **वह सदा SAFE रहता है**

- हमे साक्षी हो इन सभी को देखना है

- अपने ही **कर्मो** को

- अपने ही **संकल्पों** को

- अपनी ही **परिस्थिति** को

- **ड्रामा के हर एक्टर को**

- **स्वयं के पुरुषार्थ को**

▶ दुसरो के पुरुषार्थ को